

पाठ—36 कर्ण और दुर्योधन...

द्रोण के मारे जाने पर कौरव सेना के सेनापतित्व भार को कर्ण ने संभाला ।

कर्ण के सेनापतित्व में दुःशासन और भीम के मध्य भयंकर युद्ध हुआ जिसके परिणामस्वरूप भीम की एक प्रतिज्ञा पूरी हुई ।

कर्ण और अर्जुन के मध्य भयंकर युद्ध हुआ और अंततः कर्ण भी मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

अर्जुन के सारथी बने श्रीकृष्ण ने समय—समय पर प्रेरणा देकर अर्जुन का मार्गदर्शन किया और पथ—प्रशस्त किया ।

युद्ध अंतिम चरण में था और बस अब दुर्योधन ही बचा था; ना ही उसके पास रथ था और ना ही कोई सेना ।

स्वयं को अकेला पाकर दुर्योधन युधिष्ठिर के सामने गिड़गिड़ाने लगा लेकिन युधिष्ठिर ने अनेक दृष्टांत देकर यह अहसास करा दिया कि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है ।

भीम ने श्रीकृष्ण का इशारा समझते ही दुर्योधन की जाँघ पर गदा से वार किया और अधमरी अवस्था में उसे छोड़ कर वहाँ से पांचों पांडव लौट आए ।